रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

आर्थिक पुनर्गठनके दो अलग रास्ते

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ४१

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १० दिसम्बर, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

नयी तालीमका आदर्श

[ता० १६-७-'५५ को मिरगानगुड़ा पड़ाव (कोरापुट, अुत्कल) पर दिये गये प्रार्थना-प्रवचनसे।]

आज हम जिस स्थानमें हैं वह अेक बुनियादी अध्यापन केंद्र है। जब मैं अैसे स्थानमें जाता हूं तो मुझे अपनी पूर्व साधना याद आती है। विद्यार्थियोंको जो शिक्षक अुपलब्ध हुअे हों और शिक्षकोंको जो विद्यार्थी अुपलब्ध हुअे हों वे दोनों अेक-दूसरेके प्रति अत्यन्त अेकनिष्ठ होने चाहिये। यानी विद्यार्थियोंके लिअे गुरु देवता है और गुरुके लिअे शिष्य देवता हैं। विद्यार्थियोंको गुरुसे जो ज्ञान मिलेगा वह सर्वस्व होगा और गुरुसेवा ही अुनके लिअे सर्वस्व होगी। शिक्षकोंके लिअे विद्यार्थियोंको ज्ञान देना और अुनकी चिंता करना यही सर्वस्व होगा। गुरुको यह नहीं मालूम होना चाहिये कि मैं सेवा करता हूं तो अुसमें मेरा और कोअी मतलब सधता है। विद्यार्थियोंको यह नहीं महसूस होना चाहिये कि हम गुरुसेवा करते हैं तो अुसमें हमारा और कोअी मतलब सधता है। अिसका मतलब यह है कि विद्यार्थियोंके लिअे गुरुसेवा और शिक्षकोंके लिअे विद्यार्थीसेवा पर्याप्त ध्येय, अेकमात्र ध्येय और अनन्य ध्येय होना चाहिये और दोनों मिलकर परमेश्वरकी सेवा कर रहे हैं अैसी अनुभूति होनी चाहिये।

अिसके लिअे कुछ बातें बहुत लाभदायक होती हैं। जैसे अगर दोनों मिलकर खेती, कपड़ा बनाना, सफाअी आदि जैसा कोअी अुत्पादनका कार्य करते हों और दोनोंका सामूहिक जीवन बनता हो तो बड़ी लाभदायी वस्तु हो जाती है। अुसी तरह दोनों मिलकर अध्ययन-अध्यापन कार्य करते हैं तो वह भी अेक स्वतंत्र ध्येयके लिअे है, अिसके जरिये हम समाजकी कोअी सेवा कर रहे हैं अैसी अनुभूति होनी चाहिये। अगर अिस तरहका अनुभव अध्यापनमें और अुद्योगमें आता हो तो आज पुस्तकोंकी जो समस्या है वह नहीं अुठेगी। यानी दोनों प्रकारके अनुभवोंसे जरूरी पुस्तकें वहां पर निर्माण ही होंगी।

हमारे यहां जो अुत्तम भाष्य ग्रंथ हैं वे अिसी तरहके प्रत्यक्ष अध्यापन कार्यमें से निर्माण हुअे हैं। जैसे भगवान् शंकराचार्यने ब्रह्मसूत्र पर अेक अप्रतिम भाष्य लिखा है जो साधकोंमें बहुत मशहूर है। तत्त्वज्ञान पर अितना गहरा ग्रंथ अक्सर देखनेको नहीं मिलता है। परंतु वह अैसी प्रसन्न और आसान भाषामें लिखा है मानो सर्वसाधारण जनताके लिअे किसी साहित्यिकने लिखा हो। अिसका कारण यह है कि शंकराचार्यने अपने शिष्योंको ब्रह्मसूत्रका अध्यापन किया था। और अुस अनुभव पर ग्रंथ लिखा गया है। अुन्होंने अध्यापनके समय तो अेक-अेक सूत्र पर विस्तृत विवरण किया होगा और अुसीके नोट्स लेकर बादमें वह ग्रंथ संक्षिप्त रूपमें लिखा होगा। अिसलिअे अुस भाष्यकी शैली ही अिस प्रकारकी है मानो कोअी संवाद या चर्चा चल रही हो। वह पुस्तक पढ़ते समय हमें अैसा नहीं लगता कि किसी लेखकने ग्रंथ लिखा है और हम पढ़ रहे हैं, बल्कि अैसा लगता है कि कोअी गुरु कह रहा है और हम सुन रहे हैं।

अिस तरह अध्ययन-अध्यापन कार्य और अुद्योग अेक सामाजिक सेवाकी दृष्टिसे चले तो अुसमें से पुस्तकें निर्माण होंगी।

अिस तरह जहां पर शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर समाज-सेवाके अुद्देश्यसे अध्ययन-अध्यापन और अुद्योग करते हैं, वहां पर अुनका अनुभव वहीं तक सीमित नहीं रहता है। अुसका लाभ सारी दुनियाको मिलता है। अिस तरहसे जो ग्रंथ निर्माण होते हैं अुनका संप्रदाय चलता है और अुनके अध्ययन-अध्यापनकी परंपरा चलती है। शंकराचार्यने अपने शिष्योंके सामने सूत्रोंका जो विवरण किया वह बहुत लंबे व्याख्यानोंके रूपमें किया होगा। अिस तरह अुन्होंने दो चार बार तो जरूर पढ़ाया होगा। फिर अुस समय शिष्योंने कुछ प्रश्न पूछे होंगे और अुन्होंने अुत्तर दिये होंगे। अिस अनुभव पर अुन्होंने भाष्य लिखा और वह भाष्य अुन्हीं शिष्योंके हाथमें दिया। फिर वे शिष्य अुस भाष्यमें अत्यन्त प्रवीण वक्ता बन गये। क्योंकि अुन्होंने अुस भाष्यका ही भाष्य अपने गुरुके मुखसे सुना था। अिसलिअे जब वे दुनियामें गये तो वह ग्रंथ अुनका अपना ग्रंथ बन गया और फिर जब वे लोगोंको अेक-अेक वाक्य समझाते होंगे तो अुस समय अुनके गुरुने जो कहा होगा वह अुनको याद आता होगा। आज बारह सौ साल हुअे हैं तो भी अुस भाष्यके अध्ययन-अध्यापनकी परंपरा चल रही है। अिस तरहसे अनुभवमें से जो ग्रंथ निर्माण होते हैं अुनके अध्ययनकी योजना बनती है और विद्यादानके संप्रदाय चलते हैं।

जहां विचार-मंथन और प्रयोग दोनों अेक हो जाते हैं, घुल-मिल जाते हैं, अुसे नयी तालीम कहते हैं। जहां कुछ विचार-मंथन चलता है परंतु अुसे आचरणका आधार नहीं मिलता है, वहां पर पुरानी तालीम चलती है जो आज सर्वत्र चल रही है। जहां पर प्रत्यक्ष आचरण चलता है, आचरणके प्रयोग चलते हैं परंतु विचार-मंथन, चर्चा आदि नहीं चलती है, वह है कर्मयोग जो आज असंख्य किसान सचाअीसे कर रहे हैं। अिस तरह अिधरसे ये किसान और अुधर वे तत्त्वज्ञानी दोनों मिलकर जो चीज बनती है वह है नयी तालीमके शिक्षक और विद्यार्थी।

अिसकी मिसाल भगवान् गोपालकृष्ण हैं। अिधर तो वे गायें चराते थे, घोड़ोंकी सेवा करते थे, लड़ाअी लड़ते थे और अुधर गीता भी सुनाते थे। जो भी सेवाकार्य सामने आया अुसे करनेके लिअे वे राजी थे और अुनका हृदय निरंतर तत्त्वज्ञानसे भरा हुआ रहता था। मैंने भगवान् श्रीकृष्णकी मिसाल अिसलिअे दी कि अुन्होंने तत्त्वज्ञानमें अपने पूर्वजोंका सिर्फ अनुकरण नहीं किया

www.vinoba.in

बल्कि अुसमें वृद्धि की। अुनके पहले ज्ञानयोग चलता था, कर्मयोग चलता था और भक्तियोग चलता था। ध्यानयोग भी चलता था और गुणविकासकी प्रक्रिया भी सांख्योंने अलगसे चलायी थी। अुन सब चीजोंका समन्वय करके भगवान् कृष्णने दुनियाके सामने अेक नयी चीज अुपस्थित की। अिसलिअे हम श्रीकृष्णको जगद्गुरु कहते हैं। अुन्होंने दुनियाको नयी वस्तु दी है। यहां पर मैं कृष्ण-चरित्र कहने नहीं बैठा हूं। लेकिन मैंने मिसाल अैसे व्यक्तिकी दी जो सारा सामाजिक कार्य आध्यात्मिक दृष्टिसे करता था और जिसके जीवनमें ज्ञान और कर्मकी दोनों धारायें अेक हो गयी थीं।

बुनियादी शिक्षकोंको यही आदर्श सामने रखना चाहिये। बुनियादी शिक्षक किसी भी किसानसे, बुनकरसे या बढ़अीसे कम कुशल नहीं होंगे, बल्कि ज्यादा कुशल होंगे। किसान, बढ़अी आदिको जो चीजें नहीं सूझती होंगी वे अिन्हें सूझेंगी। किसान, बढ़अी आदि अपने काममें जो रफ्तार नहीं हासिल कर सकते होंगे वह रफ्तार अिन्हें हासिल होगी और औजारोंमें सुधार करनेकी जो बात अुन्हें नहीं सूझती होगी वह अिन्हें सूझेगी।

अुसी तरह हमारे विद्यालयोंमें जो तत्त्वज्ञानकी चर्चा चलेगी वह प्रतिभाशाली होगी और अुसमें नित्य नये विचार सूझते रहेंगे। समाजके तत्त्वज्ञानमें कैसे सुधार करना है अिस पर चिंतन चलेगा। आज दुनियामें साम्यवादकी चर्चा है, समाजवादके भी कअी प्रकार दुनियामें चलते हैं। हमारी सरकार कुछ करने जा रही है, जिसे वे लोग समाजवादी रचना कहते हैं। सर्वोदय भी अेक चीज है और अपने प्राचीन स्मृतिकारोंकी बनायी हुअी अेक योजना है। तो ये जो सारी प्राचीन और अर्वाचीन जीवनकी पद्धतियां हैं अुन सबका अध्ययन यहां पर चलना चाहिये।

कुछ लोगोंका खयाल है कि बुनियादी तालीममें ज्ञानका माद्दा कम रहेगा और कर्मका माद्दा ज्यादा रहेगा। लेकिन वे लोग गलत समझे हुअे हैं। वे समझते नहीं कि दूसरे विद्यालयोंमें जो ज्ञान दिया जाता है वह खोखला रहेगा और यहांका ज्ञान ठोस रहेगा। दोनोंके बीच अितना बड़ा फर्क रहेगा। क्योंकि यहांका ज्ञान अनुभवजन्य होगा और वहांका तर्कजन्य होगा। अिसलिअे अुस ज्ञानमें संशय होगा और अिस ज्ञानमें निश्चय होगा। वहां पर जो ज्ञानी निर्माण होंगे अुनसे कम ज्ञानी यहां पर निर्माण होंगे यह धारणा गलत है। जहां पर ज्ञान और कर्मका भेद ही मिट जाता है वहां नयी तालीम आती है। हमारे आश्रममें हम खाने बैठते थे तो खानेके साथ जो ज्ञान आवश्यक है अुसका चिंतन-मनन चलता था। हम रसोअी करते तो अुसका ठीक हिसाब करते थे। खानेके बाद हम सब अनाज साफ करनेके लिअे बैठते थे। अिधर तो वह काम चलता था और अुधर चर्चा चलती थी। हमने अुसे चर्चा-मंडल नाम दिया था। खानेके बाद मनुष्यको थोड़े आरामकी जरूरत होती है, अिसलिअे हम अुस कामको आराम ही मानते थे और काम करनेकी गतिकी ओर ध्यान न देते हुअे आरामसे काम करते थे। साथ-साथ दुनियाभरके विषयों पर चर्चा चलती थी। लेकिन अुसे पढ़ाअीका नाम नहीं दिया जाता था। अिस तरह तालीम दी जाती थी, फिर भी तालीम लेनेका नाम नहीं था। अितने सहज भावसे तालीम दी जाती थी।

जब विश्वामित्रने दशरथसे राम और लक्ष्मणकी मांग की तो पहले दशरथ राजी नहीं हुअे। अुन्होंने कहा, 'मेरा राम अभी तक सोलह सालका नहीं हुआ है।' अिसका मतलब यह है कि सोलह सालके बाद स्वतंत्र योग्यता हो जाती है। अभी राम-लक्ष्मणकी वह योग्यता नहीं हुअी है, अिसलिअे अभी तक बापका कुछ कर्तव्य है। यों सोचकर अुन्होंने राम-लक्ष्मणको विश्वामित्रको सौंपनेसे अिनकार किया था। जब वशिष्ठको यह मालूम हुआ तो अुन्होंने दशरथको समझाया कि अरे, यह तुम क्या करते हो। तुम्हारे लड़के विश्वविद्यालयमें जायेंगे, क्योंकि विश्वामित्रसे बढ़कर दुनियामें कौनसा विश्वविद्यालय हो सकता है। विश्वामित्रने मांग करते समय यह नहीं कहा था कि आपके लड़के मेरे कालेजमें भेजिये। बल्कि यह कहा कि यज्ञकी रक्षाके लिअे लड़कोंको भेजिये। फिर राम और लक्ष्मण अुनके साथ गये तो अैसी सकाम भावना लेकर नहीं गये कि हमें गुरुसे ज्ञान पाना है। ज्ञान-अर्जनकी वासना भी सकाम भावना होती है। अिसलिअे मैंने आरंभमें ही कहा था कि विद्यार्थियोंके लिअे गुरुसेवा ही सर्वस्व मालूम होनी चाहिये। अैसा नहीं मालूम होना चाहिये कि ज्ञान प्राप्त करनेके लिअे गुरुसेवा करनी होगी। राम और लक्ष्मण अेक सेवाकार्य लेकर विश्वामित्रके साथ निकले। शामका समय हुआ तो विश्वामित्रने कहा कि अब संध्या समय है तो संध्याके लिअे तैयार हो जाअिये। फिर संध्या हुअी तो और कुछ ज्ञान-चर्चा भी हुअी। अुसके बाद विश्वामित्रने राम-लक्ष्मणके लिअे पत्तोंका और घासका बिछौना तैयार किया और वे दोनों अुस पर सो गये। आप यह चित्र ध्यानमें रखिये कि राम और लक्ष्मण राजपुत्र थे, अुनकी अुम्र सोलह सालसे कम थी अिसलिअे वे पिताके वात्सल्यके भाजन थे। अुन्हें किस प्रकारके बिछौने पर सोनेकी आदत होगी अिस पर जरा सोचिये। यहां पर घासके बिछौने पर सोये तो अुनका विश्वविद्यालयका कोर्स शुरू हुआ। दूसरे दिन सुबह हुअी, चार ही बजे थे, सूरज अुगनेमें काफी देर थी। लेकिन विश्वामित्रने अुनको जगाया। खुली हवामें आसमानके नीचे, पत्तोंके बिछौने पर सोये हुअे राजपुत्रोंको जगानेका काम कितना कठोर कार्य माना जायगा? अुन राजपुत्रोंको तो अुठानेके लिअे बंदी और भाट गीत गाते होंगे और यह कहते होंगे कि अभी सूर्य अुदय हो रहा है, भृंग गुंजगान कर रहे हैं अिसलिअे हे रामजी अुठिये। लेकिन यहां पर सूर्योदय नहीं हुआ था, सारी दुनिया सोयी हुअी थी। अैसे समय पर विश्वामित्रने मधुर वाणीसे अुन दोनोंको अुठाया। अुस समय विश्वामित्रके मनमें यह भावना हो रही थी कि मैं अपने बच्चोंको अमृत पिला रहा हूं, अिस ब्राह्म मुहूर्तमें, अिस अमृतवेलामें वे सोये हुअे रहेंगे तो अुन्हें अमृत कैसे पिलाअूंगा? यों सोचकर विश्वामित्रने अुनको जगाया। बादमें चलते समय अुद्ध्वस्त अंचल दीख पड़ा तो विश्वामित्रने कहना शुरू किया कि यहां पर पहले बड़ा राष्ट्र था, लेकिन आज अुसकी अैसी दशा क्यों हुअी है। अिस तरह अितिहासका पाठ चला। आखिरमें अुन्होंने अुनको धनुर्विद्या भी सिखाअी और यह सब करके अुनसे यज्ञकी रक्षा कराअी। राम और लक्ष्मणने यह नहीं सोचा कि हम किसी विश्वविद्यालयमें दाखिल हुअे हैं और तालीम पा रहे हैं। वे तो सेवा करनेके लिअे कर्मयोगके क्षेत्रमें अुतरे थे। लेकिन सेवा करते-करते अुन्हें अुत्तम ज्ञान दिया गया। ज्ञान देनेवालेमें भी अैसी भावना नहीं थी कि हम ज्ञान दे रहे हैं और लेनेवालोंमें भी अैसी भावना नहीं थी कि हम ज्ञान ले रहे हैं। फिर भी अुत्तम ज्ञान दिया गया और लिया गया। यही नयी तालीमका आदर्श है।

विनोबा

बुनियादी शिक्षा

गांधीजी

कीमत १-८-० डाकखर्च ०-६-०

सच्ची शिक्षा

लेखक : **गांधीजी; अनु० रामनारायण चौधरी**

कीमत २-८-० डाकखर्च १-०-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

www.vinoba.in

युनिवर्सिटी डिग्री और सरकारी नौकरियां

भारत सरकारने कुछ महीने पहले अपने गृह-विभागमें अेक कमेटी नियुक्त की थी। अुसका काम भारतमें सरकारी नौकरियोंके लिअे अुम्मीदवार भरती करनेकी नीतिकी जांच करना है। अिस विषयमें मुख्य प्रश्न है: क्या सरकारके मातहत कुछ छोटीसे छोटी जगहों और नौकरियोंको छोड़कर बाकी सब नौकरियोंमें लिये जानेके लिअे युनिवर्सिटीकी डिग्री रखना आवश्यक है, जैसा कि आज माना जाता है? अैसे मामलोंमें भी, जिनमें अुम्मीदवारोंकी भर्ती स्पर्धात्मक परीक्षाओंके आधार पर की जाती है, युनिवर्सिटी डिग्रीका आग्रह रखना ठीक है या नहीं, अिसकी फिरसे जांच करना जरूरी मालूम होता है।

अिस दृष्टिसे कमेटीको नीचेके मुद्दोंकी जांच करके अपनी रिपोर्ट पेश करनेके लिअे कहा गया है:

"१. अिस प्रश्नकी जांच करना कि सरकारी नौकरियोंकी भर्तीके लिअे अुम्मीदवारोंका युनिवर्सिटीकी डिग्री रखना कहां तक और किस स्तर तक जरूरी है।

२. युनिवर्सिटी डिग्रीके अभावमें अुम्मीदवारोंकी योग्यता आंकनेके लिअे रखी जानेवाली परीक्षाओंका विचार करना।

३. अैसे कदमोंका विचार करना जिनसे सरकारी नौकरियोंके लिअे होड़ करनेवाले अुम्मीदवारोंकी संख्या बरबादीकी हद तक न बढ़ जाय।"

कमेटीने अपनी जांचके प्रारंभिक कदमके रूपमें अेक प्रश्नावली तैयार की और अब वह देशका दौरा करके विभिन्न लोगोंकी राय जान रही है। छोटीसी प्रश्नावलीमें १५ प्रश्न हैं, जो पांच मुख्य विषयोंमें बांटे गये हैं। प्रश्नावलीमें पूछे गये कुछ मुद्दोंके मैंने जो अुत्तर दिये हैं, वे नीचे अुद्धृत किये जाते हैं। अुत्तरोंसे प्रश्नोंकी कल्पना आसानीसे की जा सकती है।

१. अैसी नौकरियों और जगहोंके सिवाय जिनमें शिल्प-विज्ञान, चिकित्साशास्त्र, शिक्षाशास्त्र वगैरामें विशेष योग्यता प्राप्त करना जरूरी हो, और सबके लिअे युनिवर्सिटी डिग्रीका आग्रह रखना मैं जरूरी नहीं मानता।

२. मैं प्रश्न २—(५) में प्रकट किये गये नीचेके विचारसे पूरी तरह सहमत हूं:

"यह सुझाया गया है कि चूंकि विभिन्न प्रकारकी नौकरियोंके लिअे युनिवर्सिटीकी डिग्री पर जोर दिया जाता है, और जहां डिग्री पर जोर नहीं दिया जाता वहां भी ग्रेज्युअेट ही पसंद किये जाते हैं, अिसलिअे जिन लोगोंमें युनिवर्सिटी शिक्षणकी सच्ची योग्यता या अुसके लिअे दिलचस्पी नहीं होती वे भी अिसके लिअे अनावश्यक दौड़धूप मचाते हैं। अैसी दलील दी जाती है कि अिसकी वजहसे अेक ओर तो युनिवर्सिटी शिक्षणका स्तर नीचे गिरता है और दूसरी ओर मानव-शक्तिकी बरबादी होती है, जिसका आखिरी परिणाम निराशा और हताशामें आता है।"

मेरा दृढ़ मत है कि जब तक यह स्थिति बदलती नहीं, तब तक युनिवर्सिटी शिक्षणका स्तर सुधरनेकी या सरकारी नौकरियोंके लिअे ज्यादा अच्छे अुम्मीदवारोंकी सुव्यवस्थित भर्ती होनेकी बहुत कम संभावना है।

३. अुम्मीदवारोंकी भर्तीके लिअे मैं पदों और नौकरियोंके अनुकूल निर्धारित की जानेवाली स्पर्धात्मक परीक्षाओंको ज्यादा पसंद करता हूं। कोअी योग्यता निर्धारित करनी ही हो तो मैट्रिककी परीक्षा या अुससे भी कम प्राथमिक शालान्त परीक्षा पास करनेकी योग्यता रखी जा सकती है। मेरा मतलब यह है कि जो आदमी ग्रेज्युअेट नहीं है अुसे भी आअी० अे० अेस० परीक्षामें स्पर्धा करनेका मौका मिलना चाहिये।

४. हमारे देशकी मौजूदा परिस्थितियोंमें परिगणित जातियों और कबीलोंके लिअे सुरक्षित स्थानोंकी व्यवस्था की जा सकती है। लेकिन अेक अैसा स्तर कायम करना चाहिये, जिसे किसी नौकरीके लिअे प्राप्त करना अिन लोगोंके लिअे भी अनिवार्य हो। मेरा मुद्दा यह है कि स्थान सुरक्षित रखनेका यह अर्थ हरगिज न होना चाहिये कि नौकरियोंके लिअे अुचित कार्यक्षमताका स्तर घटा दिया जाय।

५. अस्थायी नियुक्तिवाले अुम्मीदवारोंके लिअे अपने विभागोंसे सम्बन्ध रखनेवाली अनुकूल परीक्षायें और पाठ्यक्रम पास करना जरूरी बनाया जा सकता है, ताकि वे अपना-अपना काम ज्यादा होशियारीसे कर सकें। ये परीक्षायें अेकसे अधिक हो सकती हैं, और जरूरत हो तो अनुक्रमसे रखी जा सकती हैं।

६. अिन परीक्षाओं और पाठ्यक्रमोंके लिअे सरकार ट्रेनिंग स्कूल या तालीम वर्ग चला सकती है। कुछ पाठ्यक्रम अैसे भी हो सकते हैं, जिन्हें अुम्मीदवार घर पर या खानगी शिक्षककी मददसे तैयार कर सकें।

७. मैं मानता हूं कि शिक्षणका अिस विचारके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं होना चाहिये कि अमुक डिग्रियां हासिल करनेसे सरकारी नौकरियां मिलेंगी। जहां तक संभव हो, अुम्मीदवारोंकी भर्तीके लिअे नियमित स्पर्धात्मक सार्वजनिक परीक्षाओंकी व्यवस्था की जानी चाहिये। अिसके लिअे अेक अच्छी तरह सोच-विचार कर बनाअी हुअी योजनाका होना जरूरी है। अिससे न केवल अधिक अच्छे अुम्मीदवारोंकी भर्तीमें मदद मिलेगी, बल्कि युनिवर्सिटियोंको भी अपने सुधारमें मदद होगी। सरकारकी ओरसे जब तक अैसी मदद नहीं मिलेगी तब तक युनिवर्सिटियोंकी अुस स्थितिमें सुधार नहीं हो सकता, जिसमें वे भारतमें ब्रिटिश शासनकी खास तरहकी जरूरतोंके कारण आ पड़ी हैं।

८. संभव है सरकारी नौकरियोंकी परीक्षाओंमें बैठनेवाले अुम्मीदवारोंकी संख्या पर मर्यादायें लगाना जरूरी मालूम हो। आयुकी मर्यादा अुनमें से अेक हो सकती है। मेरे विचारसे १८ से कम और २५ से अूपरकी आयुवाले किसी आदमीको अिन परीक्षाओंमें बैठने नहीं देना चाहिये। मैं नहीं मानता कि अिसके लिअे आयुकी मर्यादाके तीन स्तर रखना जरूरी है। अेक अुम्मीदवारके लिअे परीक्षामें तीन या चार बार बैठनेकी मर्यादा बांधी जा सकती है। जो अुम्मीदवार अिन परीक्षाओंमें अेक निश्चित अल्पतम स्तरके नम्बर न हासिल करे, अुसे फिरसे परीक्षामें बैठनेसे रोक दिया जा सकता है। अिसके सिवा साधारण तौर पर सरकारी नौकरियोंवाली परीक्षायें वर्ग, धर्म, लिंग आदि तथा युनिवर्सिटी डिग्रीके भेदभावके बिना सबके लिअे खुली होनी चाहिये। यह आखिरी चीज अुस दूषित अेकाधिकारके मूल्यको खतम कर देगी, जो युनिवर्सिटीकी अंग्रेजी शिक्षण-पद्धतिको अनुचित रूपमें दे दिया गया है। हम जैसे जैसे स्वराज्यमें अपनी सामाजिक संस्थाओं और आर्थिक जीवनका पुनर्निर्माण और पुनर्गठन करनेकी दिशामें आगे बढ़ेंगे, वैसे वैसे अिन परीक्षाओंके लिअे होनेवाली दौड़धूप साधारण रूप लेती जायगी।

९. सरकारी नौकरियोंसे सम्बन्ध रखनेवाली परीक्षायें पास करनेकी कसौटियां अिस तरह तय की जानी चाहिये कि अुम्मीदवारों द्वारा कला और विज्ञानके अलग अलग विषयों-सम्बन्धी साधारण ज्ञानकी अेक नियत स्तरकी सिद्धि सुनिश्चित बनाअी जा सके और अुनके विचारों तथा अभिव्यक्तिकी प्रौढ़ता तथा मानसिक अनुशासनका अन्दाज लगाया जा सके।

१–११–'५५ **मगनभाई देसाई**

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

१० दिसम्बर १९५५

आर्थिक पुनर्गठनके दो अलग रास्ते

बम्बअीसे अेक भाअी अखबारकी नीचे लिखी खबरकी कतरन भेजकर अिस बात पर सबका ध्यान खींचना चाहते हैं कि हमारा देश किस दिशामें जा रहा है:

"राजकोट, २८ अक्तू०। आज यहां मिलनेवाली अधिकृत जानकारीके मुताबिक दूधका पाअुडर बनानेवाला अेशियाका दूसरे नंबरका कारखाना मध्य सौराष्ट्रके बामणखोर, चोटीला और वांकानेर विभागमें खड़ा किया जायगा और १९५७ के मार्च मासमें पाअुडर बाजारमें बिकने लग जायगा।

"दस लाख टन दूधका पाअुडर तैयार करनेकी शक्तिवाले अुपरोक्त दस लाख रुपयेके कारखानेकी नपाअीका काम हाल ही संयुक्त राष्ट्रसंघकी शिशु-कल्याण संस्थाके सौराष्ट्र स्थित दो निष्णातोंने पूरा किया है।" (प्रजातंत्र, २९-१०-'५५)

अिसके बाद वे अिस विषयकी चर्चा करते हैं और अुसके साथ नकली घीकी बात जोड़ कर कहते हैं:

"अिस विषयमें निवेदन करना है कि परदेशसे अनेक प्रकारका दूधका पाअुडर हमारे देशमें मंगवाकर जबरन् चायके होटलवालोंको दिया जाता है, अिसलिअे शुद्ध दूधकी अेक बूंद भी जनताको चाय द्वारा नहीं मिल सकती। मानो अिसमें कुछ कमी रह गअी है, अिसलिअे सौराष्ट्रमें दूधका पाअुडर बनानेका कारखाना खोलनेकी हलचल चल रही है। यदि अिस तरह लाखों टन दूधका अुपयोग पाअुडर बनानेमें होगा तब तो अुस रामराज्यके नजदीक आनेकी आशा नहीं रखी जा सकती, जब सौराष्ट्रमें घी-दूधकी नदियां बहती देखी जाती थीं। और फिर तो पशुधनकी रक्षाकी बात भी नहीं रह जाती।

"अनेक तरहके वनस्पति घीके कारखाने हमारे देशमें खड़े किये जाते हैं, और वह सारा वनस्पति जनता डालडाके नाम पर बाजारमें खरीदती है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जीवित थे, तब आपके 'हरिजनबन्धु' में अिस सम्बन्धमें काफी लेख लिखे जाते थे और यह सूचना की गअी थी कि अुस समय देशमें जो लगभग ३४ कारखाने खुल चुके थे अुनकी संख्या कम की जाय (जिससे जनताको शुद्ध घी-दूध मिले)। अुसके बजाय आज तो वनस्पति घीके कारखाने अुल्टे बढ़ रहे हैं! अतः जब तक ढोरोंका पालन-पोषण और पशुरक्षा भारतमें व्यवस्थित ढंगसे नहीं होती तब तक शुद्ध दूध-घीकी आशा रखना व्यर्थ है।"

पत्रलेखककी बात बिलकुल सच है। अगर मैं यह कहूं तो सरकार मुझे माफ कर देगी कि विदेशोंसे सरकारने दूधका पाअुडर मंगाना शुरू किया, अुसके भीतर शहरोंको दूध मुहैया करनेकी बातके साथ पाअुडरका विदेशी व्यापार और दूधका केन्द्रित अुद्योग खड़ा करनेकी बात भी थी। अब यह बात सूझे बगैर नहीं रह सकती कि विदेशोंसे दूधका पाअुडर मंगानेके बजाय भारतमें दूधकी अच्छी पैदावारवाले प्रदेशोंमें पाअुडरके कारखाने खोले जायं और 'स्वदेशी' पाअुडर बनाया जाय। अिस ढंगसे काम किया जाय तो राष्ट्रकी पंचवर्षीय योजनाके लिअे काम मिलेगा, यंत्रोद्योग बढ़ाकर गोबर-युगमें से अणु-युगमें जाया जा सकेगा और प्रजाका विकास भी समाजवादी ढंगसे आगे बढ़ेगा!

थोड़ी गुप्त होते हुअे भी अैसी शिथिल और अपरिपक्व विचारणासे आज सरकारके काम और योजनायें चल रही हैं और अुनमें पानीकी तरह पैसा बहाया जाता है। यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि अिसमें जनताके मूल और सच्चे कल्याणके बजाय अलती-भलती बातोंका ही हितरक्षण होता है।

दूधके पाअुडरका अैसा ही अेक बड़ा कारखाना आजकल आणंदमें खड़ा किया जा रहा है। अिसमें प्रजाके सरकारी पैसे लगाये जा रहे हैं। अिस तरह प्रजाकी सच्ची सम्पत्ति दूध, घी और अनाज वगैराकी विपुलता देशमें हर जगह बनाये रखनेका प्रयत्न करनेके बजाय अूंचे भाव देकर अुन्हें आधुनिक अर्थशास्त्रकी युक्तियों द्वारा पैसेके राज्यके जालमें फंसाया जा रहा है। और अिस तरह लोगोंमें जो पैसा बढ़ाया जायगा, अुसे वापिस खींचनेके लिअे फिर नये धंधे पैदा होंगे, सिनेमा वगैरा द्वारा संस्कार-विकास किया जायगा; और अैसा करके आज जिसे नयी आर्थिक परिभाषामें 'विकसित होनेवाली अर्थरचना' कहा जाता है अुसका जाल अधिकाधिक फैलाया जायगा। अब हमें अिस बारेमें कोअी शंका नहीं रह जानी चाहिये कि यह रास्ता दुःखका और अशांतिका है तथा नये नये अुपद्रवों और खतरोंसे भरा हुआ है, क्योंकि पश्चिमी सभ्यताके अिस तरीकेके नतीजे अब हम स्पष्ट देख सकते हैं। आजका राजकर्तावर्ग यदि गरीब भारतको अिस मार्ग पर ले जाता हो तो वह बड़ी भूल कर रहा है। भारतकी ग्रामीण संस्कृतिका रास्ता अिससे भिन्न है; हमें अुसका अध्ययन करके आधुनिक युगके अनुरूप अुसका फिरसे विकास करके देशमें सच्चे स्वराज्यकी स्थापना करनी चाहिये।

दूधके पाअुडरका यह धंधा किसके लिअे है? क्या सौराष्ट्रमें सबको पूरा दूध मिल जानेके बाद बचता है जो वहां यह धंधा खोलनेकी बात सोची जा रही है? और अगर दूध ज्यादा हो तो क्या घरमें ही स्वच्छतापूर्वक अुसका घी बनानेकी रीति हमारे लोगोंने नहीं खोज निकाली है? अुस रीतिमें से मट्ठा वगैरा जो चीजें पैदा होती हैं वे भी अुपयोगमें आ जाती हैं और गरीब लोगोंको सस्ते दामों या मुफ्तमें मिलती हैं। क्या यह सच्ची अर्थनीति नहीं है?

और अिन गरीबोंके घरमें पैदा होनेवाले कच्चे मालके लिअे अैसे कारखाने खोलनेका नतीजा अिसके सिवा और क्या होगा कि बीचके दलाल खड़े करके मध्यमवर्गके लोग अिन गरीबोंका पैसा हजम करते रहेंगे? यदि कोअी सहकारी पद्धतिसे काम करनेकी बात करे तो वह भी आजकी स्थितिमें लिमिटेड कंपनीकी नअी रीतिकी तरह बेकार चीज ही बन जाती है।

वनस्पति घीको भी अूपरकी बात लागू होती है। अुसने शुद्ध घीका नाश करनेमें सफलतापूर्वक हाथ बंटाया है। वनस्पतिके कारखानों द्वारा होशियार मध्यमवर्ग खुशहाल बनता है, सरकारको आमदनी होती है तथा प्रजाका स्वास्थ्य नष्ट होता है। हालमें ही बम्बअीके स्वास्थ्यमंत्रीने घीमें मिलावटकी बात करते हुअे वनस्पतिके बारेमें अपना दुःख प्रकट किया है। क्या सरकार वनस्पति घीका अुत्पादन रोक नहीं सकती, जो अुसके मंत्रीगण भी अिस तरह दुःख प्रकट करके ही रह जाते हैं?

अब दूधके पाअुडरका धंधा बढ़नेसे शुद्ध घीकी तरह शुद्ध दूधका मिलना भी बन्द हो जायगा। बम्बअीमें तो 'टोन्ड' कहे जानेवाले मिलावटी दूधका स्वाद लोगोंको लगाया जा रहा है। वनस्पति घीकी तरह यह मिलावटी दूध भी शहरी लोगोंकी जबान

www.vinoba.in

पर आखिर चढ़ जायगा। अिस तरह दूधके पाअुडरका धंधा अपने पैरों पर खड़ा होगा। और फिर कहा जायगा: हम क्या करें, लोग मिलावटी दूध ही पसंद करते हैं? शुद्ध दूध-घी वगैरा सारी चीजों पर यंत्रोंका यह हमला सच पूछा जाय तो जनताके स्वास्थ्य, सच्ची सम्पत्ति और सच्चे लोककल्याण पर ही हो रहा है। अिसमें भारतकी प्रजाको बेकार बनाने या शहरों पर अवलंबित बनानेके ही अुपाय छिपे हुअे हैं। सच्ची सम्पत्ति पैदा करके घर बैठे किये जानेवाले कामोंके बदले अुद्योगपति कहते हैं कि तरह-तरहके खुलनेवाले नये कारखानोंमें, खानोंमें और अिन सबके लिअे खुलनेवाले नये व्यवस्थाकार्यमें हम सबको लगा देंगे और सरकार अुनकी यह बात मानती है, या चुप रहकर अपनी आधी संमति तो देती ही है।

अिस सबके भीतर गहरे अुतरें, तो दो भिन्न मार्ग स्पष्ट दिखाअी देते हैं: अेक मार्ग गांधीजी द्वारा बताया हुआ सर्वोदयके अर्थशास्त्रका; और दूसरा मार्ग समाजवादी अर्थशास्त्रका, जो पश्चिममें चलता है और जिसके आधार पर हमारी सरकार आगे बढ़ रही है। दूसरे शब्दोंमें कहें तो अेक मार्ग छोटे-छोटे गृह-अुद्योगों और ग्रामोद्योगों द्वारा देशको आगे बढ़ानेका है और दूसरा मार्ग बड़े-बड़े यंत्रोद्योगोंका है। जवाहरलालजी आज दूसरे मार्गका मंत्र जपते हैं; पहलेको वे प्रयोगके रूपमें थोड़ा स्थान देनेके लिअे तैयार हैं। हालमें कर्वे कमेटीकी जो रिपोर्ट प्रकाशित हुअी है, वह भी निष्ठा और सिद्धान्तकी दृष्टिसे अूपरकी मर्यादासे बाहर नहीं जाती। होना तो यह चाहिये कि खान-पान, वस्त्र तथा अिनसे सम्बन्धित अुद्योग प्रजाके विकेन्द्रित ग्रामोद्योग रहें, जो देशके लोकजीवनके प्राण हैं। प्रजाके हाथसे अुन्हें छीनकर अगर तरह तरहके कारखाने खोलकर ये अुद्योग-धंधे अुन्हें सौंपे जायं, तो आम जनताका द्रोह होगा और बेकारी दूर नहीं होगी। हमारे नये अर्थतंत्रकी रचनाका यह ध्रुव सत्य है। सरकार जब तक अुसे स्वीकार नहीं करेगी, तब तक देशकी प्रगतिकी दिशा पकड़नेमें पूंजीवादका और केन्द्रित सत्ताधारी नौकरशाही राज्यका भय खड़ा ही रहेगा। दूधके कारखानोंसे गोपालन नहीं होता, बल्कि बीचमें दलाली करके पैसा पैदा करनेवालोंके नये धन्धे खड़े होते हैं, चीजें महंगी होती हैं और अमृत जैसा दूध निःसत्त्व पाअुडर बन जाता है। अुससे स्वास्थ्य नहीं बढ़ता, केवल नया अुद्योग केन्द्रित बनता है और भोली-भाली जनताको पैसेकी विपुलता दिखाकर नये युगके मायामृगकी ओर आकर्षित किया जाता है। अतः भारतकी जनताको सच्चा निर्णय यह करना है: अूपर बताये गये दो मार्गोंमें से कौनसा मार्ग अपनाया जाय? दोनोंका समन्वय हो सकता है, लेकिन वह सरकारको पसंद नहीं है। वर्ना अुसे यह घोषित करना चाहिये कि राष्ट्रके अुद्योगोंका खानपान और वस्त्र पैदा करनेवाला जो जनतासे सम्बन्ध रखनेवाला भाग है, अुसमें यंत्रोंका प्रवेश नहीं होगा, और अुनसे संबंधित अुद्योगोंको विकेन्द्रित और ग्रामीण पद्धतिसे चलाते हुअे भी अुन्हें ज्ञान-विज्ञानकी शक्तिका पूरा लाभ देनेके लिअे संशोधन किया जायगा। आज तो वैज्ञानिक संशोधनकी विशाल सरकारी प्रयोगशालायें भी अिस दृष्टिसे व्यर्थ जैसी ही हैं। भारतकी विदेशनीतिकी तरह ही — अुसे स्थिर बनानेके लिअे — हमारी अर्थनीति पर भी हमें गहरा विचार करना होगा। सच्चा प्रजाबल ही सरकारको यह चीज समझा सकता है। अुस बलकी आराधना करना ही आजका सच्चा रचनात्मक कार्य माना जायगा। कांग्रेस अिस कार्यको अपनावे तो ही वह पहले जैसी महाशक्तिके रूपमें टिकी रह सकती है।

५-११-'५५ **मगनभाई देसाई**

(गुजरातीसे)

www.vinoba.in

दिल्ली और बम्बअी

अनेक पहलुओंसे विचार करनेके बाद बम्बअी राज्यके तीन भाग करनेकी जो योजना कांग्रेस वर्किंग कमेटीने पेश की थी, अुसे महाराष्ट्र स्वीकार करके आगे बढ़े अैसी सूचना पहले मैंने की थी।* अुसके बाद तो बम्बअीमें अनेक घटनायें हो गअीं, जिनकी चर्चामें पड़नेकी मेरी अिच्छा नहीं है। अुन सबके सार रूपमें तीन भागोंकी सूचना ही अिस दुःखद प्रकरणके अुत्तम हलके रूपमें फिरसे सामने आअी है। यह बताता है कि वह सूचना सबके लिअे हितकारी है अैसा मानकर अब सन्तोषपूर्वक सबको अेक होकर आगे बढ़ना चाहिये। हमें अिस दृष्टि और समझको भूलना नहीं चाहिये कि अन्तमें तो सारे भारतके हितमें ही अुसके प्रत्येक घटक राज्यका भी हित समाया हुआ है।

यह बात सब कोअी जानते हैं कि अिस सारे प्रकरणमें मुख्य मुद्दा बम्बअी शहरके स्थानका है। अुस शहरको किसी अेक राज्यमें न रख कर स्वतंत्र स्थान देनेमें हर तरहसे लाभ है, अिस बातको ध्यानमें रखकर बम्बअीकी नयी व्यवस्था की जानी चाहिये।

यह व्यवस्था कैसी हो, यह प्रश्न अब अूपर आता है। आज तो अुसके विषयमें अितना ही विचार किया जाता है कि अुसका नया राज्य बनाया जाय। अर्थात् बिहार, बंगाल, केरल, मद्रास, गुजरात, महाराष्ट्र आदिकी तरह बम्बअीका अलग नगर-राज्य बनाया जाय। अिस विचारकी गहरी जांच करके अब अुसे पक्का बनाना चाहिये।

राज्य-पुनर्रचना कमीशनने तो बम्बअी राज्यका अिस ढंगसे विचार किया ही नहीं था, अिसलिअे अुसने अिस सम्बन्धमें कोअी गहरा विचार नहीं किया था कि बम्बअी शहरको अगर अलग राज्य बनाया जाय तो अुसका स्वरूप कैसा हो। बल्कि अुसने (अपनी रिपोर्टके पैरा ४२९ में) तो यह कहा है कि बम्बअी शहरकी आबादी तथा क्षेत्रफल वगैराको देखते हुअे अुसे भारतके अेक विधिवत् राज्यका दर्जा नहीं दिया जा सकता; और अुसे केन्द्रीय सरकारके मातहत अेक विभाग बनानेका मतलब होगा अुसके जैसे आगे बढ़े हुअे शहरकी प्रगतिको रोकना।

कमीशनकी अिन दोनों दलीलोंमें कुछ सचाअी है। बम्बअीका नगर-राज्य बहुत छोटा होगा, यह तो स्पष्ट बात है। यह भी सच है कि अगर वह धारासभा वगैरा रखनेवाले राज्योंके दर्जेका बने तो अुसमें अलग ही रूपके तरह-तरहके सवाल पैदा होंगे।

दिल्लीको नगर-राज्य रखनेके बारेमें कमीशनने अपनी रिपोर्टके दिल्ली-प्रकरणमें जो चर्चा की है, वह भी बम्बअीके विषयमें विचार करनेमें कुछ प्रकाश डालनेवाली है। अुसकी कुछ बातें बम्बअी पर भी लागू होती हैं।

यह सब देखते हुअे अैसा लगता है कि बम्बअी शहरके बारेमें अैसी कोअी व्यवस्था की जानी चाहिये, जिससे वह किसी अेक राज्यका भाग न बने और साथ ही अूपर बताअी हुअी कठिनाअियां भी न रहें। अिसलिअे बम्बअी शहरको अेक विधिवत् **राज्य** बनानेके बदले अुसे भारतकी **दूसरी राजधानी**का दर्जा दिया जाना चाहिये। भारत-सरकारके कुछ विभाग बम्बअीमें ही रहें। आज भी कुछ केन्द्रीय विभागोंका महत्त्वका स्थान बम्बअी ही है; अुसे अब कानूनी ढंगसे यह रूप दे दिया जाय। अुदाहरणके लिअे, सर्दियोंमें केन्द्रीय सरकार दिल्लीके बदले बम्बअीमें अेक नियत समयके लिअे काम करे। राष्ट्रपति भी अुन दिनोंमें नियमित रूपसे बम्बअीमें ही रहें।

अैसा हो तो मुझे लगता है कि बम्बअी राज्यमें सबको आनन्द होगा और बम्बअी शहरको अुसका अुचित महत्त्व प्राप्त होगा। यह विचार बरसोंसे मेरे मनमें रहा है। अैसा लगता है कि आजकी स्थितिमें वह अुत्तम काम दे सकता है। अतः

* देखिये ता० १९-११-'५५ का 'हरिजनसेवक', पृ० २९७।

में आज अुसे अिस आशासे सबके सामने रखता हूं कि कांग्रेस और सरकार अुसकी जांच करेगी।

७-१२-'५५ मगनभाई देसाई

(गुजरातीसे)

बम्बअी सरकारकी सर्वोदय योजना

बम्बअी राज्यमें सर्वोदय केन्द्र कायम करनेमें मेरा हाथ रहा है, अिसलिअे मैं ता० १९-११-'५५ के 'हरिजन' में प्रकाशित 'समाज-सेवाके स्वरूप' नामक लेखमें* बम्बअी सरकारकी सर्वोदय योजनाका जो विश्लेषण किया गया है, अुसके संबंधमें कुछ बातें कहना चाहूंगा।

पहली बात तो यह है कि वह कोअी सरकार द्वारा सोचा हुआ सर्वोदयका कार्यक्रम नहीं है, जिसे अिस प्रयोग द्वारा आगे बढ़ानेका विचार किया गया हो। अिस योजनाके पीछे रहा अुद्देश्य १९४८ के बजट-भाषणमें बताया गया था, जिसका अेक हिस्सा मैं नीचे अुद्धृत करता हूं।

> "हमारे रचनात्मक कार्यक्रमके बारेमें हाल ही अेक नये विचारका विकास हुआ है, जिसका जिक्र मैं यहां करना चाहूंगा। गांधीजी हमेशा कहा करते थे, 'रचनात्मक कार्यक्रमकी सफलता ही स्वराज्य है।' गांधीजीके अिस विचार पर दृढ़ श्रद्धा रखते हुअे सरकार अपनी विकास-योजनाओंमें कोअी अैसा विशिष्ट तत्त्व दाखिल करना चाहती है, जो गांधीजीके प्रिय रचनात्मक कार्यक्रमके अनोखे पहलुओंको प्रतिष्ठा प्रदान कर सके। पिछले कुछ वर्षोंमें गांधीजी यह मानने लगे थे कि ग्रामवासियोंकी स्थितिको सुधारनेके लिअे बनाये गये अुनके रचनात्मक कार्यक्रमका कोअी भी अंग — अुदाहरणके लिअे, हाथ-कताअीका विकास, दूसरे ग्रामोद्योगोंका पुनर्जीवन, हरिजनोंका कल्याण, गोरक्षा — अकेला नहीं है; यह आवश्यक है कि ये सभी अेक संपूर्ण अिकाअीके अंग हों। अुनका मत था कि ग्राम-समाजकी सेवामें ग्रामजीवनके सारे क्षेत्रोंका समावेश होना चाहिये — अुसे समग्र ग्रामसेवा बनना चाहिये। गांधीजीके सामाजिक तत्त्वज्ञानका आधार सबका भला था, जिसे कुछ लोगोंने 'सर्वोदय' कहा है। सरकारकी अिच्छा है कि प्रान्तमें कुछ पिछड़े हुअे हिस्से समग्र विकास — शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक — के लिअे चुने जायं और अुन्हीं पर सारा ध्यान केन्द्रित किया जाय। प्रान्तके अैसे भागोंमें, जो अर्धविकसित हैं और जहां अधिकतर पिछड़ी हुअी जातियों या वर्गोंकी आबादी है, चुनी गअी अैसी हर अिकाअीमें ३० से ५० गांवोंका अेक समूह होगा, जिनकी सामाजिक और आर्थिक दशा लगभग अेकसी होगी। अिस योजनाकी तफसीलें अभी तय करनी बाकी हैं; लेकिन सरकारका यह अिरादा है कि अगले साल जल्दी ही यह काम शुरू कर दिया जाय। अिस अुद्देश्यके लिअे सरकारने १९४८-४९ से चार वर्षकी अवधिके लिअे १ करोड़की रकम देना तय किया है।"

दूसरे, अिस योजना पर अमल करनेका काम सरकारी अधिकारियोंको नहीं सौंपा गया था। यह योजना शुरू करनेसे पहले तत्कालीन सरकारने अपना ध्यान हर जिलेमें अैसे संचालककी पसंदगी पर केन्द्रित किया, जो गांधीजीके रचनात्मक कार्यक्रममें लगे हुअे समाज-सेवकोंमें से चुना जानेवाला था। अपने सहयोगीकी नियुक्तिमें तथा कार्यका व्यापक कार्यक्रम तैयार करनेमें निर्णयात्मक मत संचालकका ही होता था।

संचालकोंको किसी बने-बनाये ढांचेको अपनानेकी सिफारिश नहीं की जाती थी। अुनसे केवल यही कहा जाता था कि वे ३० से ५० गांवोंके अपने समूहका सामाजिक और आर्थिक विकास करनेके अपने कर्तव्यकी समग्र दृष्टि सामने रखें। स्थानीय कार्यकर्ताओंके साथ सलाह-मशविरा करके कार्यक्रमकी तफसीलें तय करनेका काम अुन्हीं पर छोड़ दिया जाता था, ताकि जिन लोगोंकी सेवाकी अपेक्षा अुनसे रखी जाती थी अुनकी जरूरतोंके अनुकूल काम हो सके। संपूर्ण कार्यक्रम यथा-संभव ग्रामजीवनके अिन सारे पहलुओंको छूता था: खेती, गृह-अुद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य और सफाअी तथा सामाजिक सुविधायें, मनोरंजन और सांस्कृतिक प्रवृत्तियां।

योजनाकी तफसीलें संचालक ही तय करते थे, जिनमें पूरे समयके लिअे नियुक्त किये जानेवाले सहयोगियोंकी संख्या और अुनका वेतन भी शामिल था। लेकिन दो-तीन मर्यादायें अैसी थीं जिनके भीतर रहकर अिस कार्यक्रम पर अुन्हें अमल करना होता था। अेक वर्षके खर्चकी अधिकसे अधिक मर्यादा रु० १००००० तय कर दी गअी थी। वर्षमें स्वीकार की हुअी योजनाओं पर ही, कुछ फेरबदलके साथ, खर्च किया जा सकता था। अिसके अलावा, सहकारी समितियोंके रजिस्ट्रारके मातहत काम करनेवाले कर्मचारियोंके जरिये सरकार द्वारा समय-समय पर हिसाब-किताबकी जांच करनेकी व्यवस्था रखी गअी थी। लेकिन रजिस्ट्रार या कर्मचारी योजनाओंके अमलमें किसी तरहकी दस्तंदाजी नहीं कर सकते थे। ये योजनायें आवश्यक रूपमें राज्य सर्वोदय कमेटीसे स्वीकार करानी होती थीं, जिसमें अधिकतर सरकारके मंत्री ही होते थे।

हो सकता है कि योजना पर अमल करनेके अिस स्वरूपका मेल सर्वोदयी संगठनके साथ न बैठे। लेकिन मैं यह बताना चाहूंगा कि सरकार द्वारा हाथमें लिये जानेवाले राष्ट्रनिर्माणके कार्यों तथा सामूहिक विकास योजनाओं और राष्ट्रीय सेवा संगठनके सामान्य अमलमें और अिन योजनाओंके अमलमें बहुत ज्यादा फर्क है।

(अंग्रेजीसे) वैकुण्ठभाअी महेता

भारत और विश्वशांति

[श्री अे० पी० पट्टणीने फिलाडेल्फिया (पेन्सिल्वेनिया, अमेरिका) की अमेरिकन फ्रेन्ड्स सर्विस कमेटीको विश्वशांति विषय पर अेक पत्र लिखा था, जिसकी अेक नकल अुन्होंने 'हरिजन' में प्रकाशित करनेकी अिजाजतके साथ मेरे पास भिजवाअी है। नीचेका हिस्सा अुसी दिलचस्प पत्रसे लिया गया है।

९-११-'५५ — म० प्र०]

१. गांधीजीने अेक बार लिखा था: "अणुबमके अिस युगमें शुद्ध अहिंसाकी शक्ति ही हिंसाकी सारी युक्तियोंको अेक साथ विफल बना सकती है।" अिस अर्थमें और धर्मग्रन्थोंके अर्थमें अहिंसा 'विकासकी दिशामें आगे बढ़ानेवाला अेक निश्चित कदम है।' यह पैगम्बरों, सन्तों और विकासकी प्रक्रियाका मार्ग दिखानेवाले कुछ अिने-गिने विशिष्ट प्रतिभासंपन्न महापुरुषोंका मार्ग है। अेक बार अुदाहरणके तौर पर मैंने अपने अेक मित्रको अेक संस्कृतकी कहानी सुनाअी थी; चूंकि अुन्होंने अपनी पुस्तकमें अुसका वर्णन किया है, अुसे मैं यहां अुद्धृत करता हूं:

> "यह कहानी* अेक ब्राह्मणके विषयमें है, जिसने किनारे पर बैठे बैठे अेक बिच्छूको नदीमें डूबते देखा। तीन बार ब्राह्मणने अुसे बचानेका प्रयत्न किया और तीन बार बिच्छूने अुस हाथको डंक मारा जो अुसकी मदद कर सकता था। देखनेवाले अेक आदमीने ब्राह्मणसे कहा, 'मूर्ख, क्या तुम यह नहीं जानते कि डंक मारना बिच्छूका स्वभाव है?' ब्राह्मणने फिर अपना हाथ फैलाया और कहा, 'हां, अुसका जीवन बचाना मेरा स्वभाव है।'
>
> "पट्टणी साहबने अपनी सदाकी मुसकानके साथ कहानी पूरी की। अुन्होंने कहा, 'मैं अिसका अनुसरण करनेका ढोंग

* यह लेख 'हरिजनसेवक' के ता० ७-५-'५५ के अंकमें 'सेवाकार्य, व्यक्ति और संस्था' शीर्षकसे छपा है।

* 'टु लिव अिन मेनकाअिन्ड' (अे क्वेस्ट फॉर गांधी) — पृ० १२६: लेखक — रेज़िनाल्ड रेनॉल्ड्स।

www.vinoba.in

नहीं करता, लेकिन मेरा खयाल है कि यह शांतिवादकी अेक सुन्दर कहानी है। मैं अितनी दूर तक तो नहीं देख सकता जिससे आपको यह बता सकूं कि यह कहानी काम देगी या नहीं, लेकिन अितना मैं आपसे कह सकता हूं कि हमारा मार्ग असफल रहा है। अगर दुनिया कोअी दूसरा मार्ग न खोज पाये तो हमारी शामत आअी समझिये। मैं तो बूढ़ा हो गया हूं, और मुझे अिसकी बहुत परवाह नहीं है। लेकिन आप काफी जवान हैं और अिसका प्रयोग कर सकते हैं। भगवान आपको सफलता दे।'"

२. स्वतंत्र भारतने शान्तिके लिअे अपना नम्र योग दिया है। हमारी सरकार 'युद्धकी तैयारी किये बिना' या अुस शीत-युद्धमें शरीक हुअे बिना, जिसमें दोनों पक्ष 'शक्तिके जरिये समझौतेकी बातचीत करना चाहते हैं', यह कर सकी अिसका कारण यह है कि हमारे अधिकतर नागरिकोंकी श्रद्धा 'अहिंसा परमो धर्मः' सूत्र पर है। फिर, धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष संस्थायें तथा राजनीतिज्ञ और राजपुरुष शान्तिकी घोषणा करते और अुसके लिअे प्रयत्न करते हैं, और दुनियाके राष्ट्र शान्तिका या 'युद्धका अन्त करनेके लिअे युद्ध' का वचन देकर सेनायें खड़ी करते हैं। यह सब बताता है कि अधिकतर लोग अहिंसाको पसन्द करते हैं, भले वे सारी परिस्थितियोंमें खुद अुसका पालन न कर सकें। लोग कम या अधिक मात्रामें शान्तिके प्रयत्नमें हाथ बंटाते हैं, यह भारतमें और अन्य देशोंमें लोगोंने जिस तरीकेसे गांधीजीका अनुसरण किया अुससे देखा जा सका है। यह सच है कि लोगोंकी रक्षाके लिअे हमारी सरकारको शक्तिका अुपयोग करना पड़ा और शस्त्र धारण करने पड़े हैं, लेकिन दुनियाके दूसरे भागोंकी तुलनामें यहां जिस शक्तिका अुपयोग किया गया वह नगण्य-सी ही थी।

३. दुनियाकी बहुसंख्यक आबादी अभावों और गरीबीकी शिकार है। ये सब बड़ी 'हिंसा'के रूप हैं तथा अधिकतर राजनीतिक और सामाजिक बुराअियों, जिनमें अुपनिवेशवाद और युद्ध भी शामिल है, के कारण और परिणाम हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघमें आन्तरराष्ट्रीय सहयोग द्वारा अिन बुराअियोंको दूर किया जा सकता है और किया जाना चाहिये। यह शांतिवादी सभ्यताकी स्थापनाकी दिशामें पहला महत्त्वपूर्ण कदम होगा।

४. मनुष्यको पहले-पहल जब-अेक सर्वव्यापी आध्यात्मिक शक्तिकी, जो अुसे दुःख देनेवाली, डरानेवाली और अुसकी हत्या करनेवाली भौतिक शक्तियोंसे अूपर और अुसकी बुद्धिसे परे है, 'प्रतीति' हुअी तभीसे वह अुस परम शक्तिके समीप आनेका तथा अुसके साथ अेकरूप हो जानेका प्रयत्न करता आया है।

बाअिबलके 'दैवी राज्य' की और संस्कृत धर्मग्रन्थोंके 'सतयुग' की (जिसे जनसाधारण रामराज्यके नामसे जानते हैं) घृणा और असत्यसे भरी दुनियामें कल्पना भी नहीं की जा सकती। धर्मग्रन्थोंका यह वचन है कि प्रेम और सत्यकी दुनियामें ही वह संभव था और है। केवल प्रेम और सत्यके मार्ग द्वारा ही अुसे सिद्ध किया जा सकता है। अिन दोनोंके लिअे जाग्रत और अर्धजाग्रत रूपमें प्रयत्न करते हुअे आदिम, स्वकेन्द्रित, शिकारी मानव धीरे-धीरे पारिवारिक मानव बना, परिवारोंका विकास होकर ग्रामजीवनका जन्म हुआ, ग्रामोंसे राज्यकी अुत्पत्ति हुअी और राज्योंने राष्ट्रोंका रूप लिया, जो आज धीरजके साथ 'सह-अस्तित्व' तथा अधिक समृद्ध और सुखी जीवनके लिअे प्रयत्न कर रहे हैं। अमेरिकाके लोग (अिंग्लैण्ड और केनाडाकी लोकशाहीकी तरह अुनकी लोकशाही भी अेंग्लो-सेक्सन मूलसे अुत्पन्न हुअी है) अिस कार्यमें शस्त्रोंके बिना भारी मदद पहुंचा सकते हैं।

(अंग्रेजीसे) अे० पी० पट्टणी

www.vinoba.in

शिक्षणका स्तर और अंग्रेजी भाषा

भारत-सरकारके युनिवर्सिटी ग्रान्ट कमीशनने अेक जानने लायक जांचके लिअे हालमें ही अेक कमेटी नियुक्त की है। श्री हृदयनाथ कुंजरू अुसके अध्यक्ष हैं तथा डॉ० रामस्वामी मुदालियर और प्रो० सिद्धान्त अुसके सदस्य हैं। कमेटीको अिस बातकी जांच करनी है कि अंग्रेजी भाषाके कच्चे ज्ञानके कारण युनिवर्सिटी शिक्षणका स्तर नीचे गिरनेकी शिकायत कहां तक सच है। जांचका मुद्दा कौनसे निश्चित शब्दोंमें रखा गया है यह जाननेके लिअे कोअी सरकारी कागजात मेरे पास नहीं हैं; अखबारोंमें अुसके साररूपमें जो कुछ पढ़ा, अुसी परसे अूपरकी बात मैंने लिखी है।

जांचका मुद्दा यदि यही हो तो वह अधूरा है। अिसके सिवा अगर यह माना जाता हो कि अंग्रेजी भाषाके कच्चे ज्ञानसे संपूर्ण शिक्षणका स्तर नीचे गिरता है तो वह भी सही नहीं होगा। अंग्रेजीके कच्चे ज्ञानसे अंग्रेजी भाषाके ज्ञानका स्तर नीचे गिरेगा, और संपूर्ण शिक्षणका स्तर भी गिरेगा — अगर पहलेके समान अंग्रेजीको ही बिना सोचे-विचारे शिक्षणका माध्यम रहने दिया जाय। अिसलिअे अधिक निश्चित शब्दोंमें कमेटीकी जांचका मुद्दा यह होना चाहिये: अंग्रेजी भाषा कम आने पर भी यदि अुसे माध्यमके रूपमें जारी रहने दिया जाय तो शिक्षणके स्तर पर अुसका क्या असर होगा?

मुझे लगता है कि मुद्देको यह स्वरूप दिया जाय तो जांचके लिअे ज्यादा कुछ नहीं रह जायगा। क्योंकि तब तो आसानीसे कहा जा सकता है कि यह बिलकुल साफ बात है। और अुलटा यह प्रश्न पूछना पड़ेगा कि, अैसा है तो आप अंग्रेजी माध्यमसे ही क्यों अभी तक चिपटे हुअे हैं?

परंतु पिछली पीढ़ीके बुजुर्गोंका अभी अंग्रेजीकी सुन्दरताका मोह दूर नहीं हुआ है। अुस भाषाके आधार पर शिक्षणका स्तर आंकनेकी कुटेववाले लोग आज भी भारतमें बहुत हैं और वे ही युनिवर्सिटियां चलाते हैं। अुन्हें अपनी भाषाओंमें अंग्रेजीके ज्ञानको अुतारनेकी फुरसत नहीं है, अिच्छा नहीं है और परवाह भी नहीं है। अैसे लोग अभी तक पुराने स्तरोंकी धुनमें ही मस्त हैं। वैसे देखा जाय तो प्रचलित शिक्षणमें स्तर जैसी कोअी अूंची चीज ही क्या है, जिसके नीचे गिरनेकी चिन्ता की जाती है!

यह स्पष्ट है कि अगर नीचे गिर रहे स्तरको थोड़ा भी आधार देना हो तो विद्यार्थी जिस भाषाको समझें अुसीमें अुन्हें शिक्षा देनी चाहिये। अिस मूल सिद्धान्तका ही अिधर-अुधरकी बातें करके पालन न किया जाय तो दूसरा क्या होगा? जहां अिस न्यायसे काम शुरू होता है, — जैसे कि गुजरातमें, वहां तुरन्त स्वागतके लायक फर्क दिखाअी देता है। आज सच्चा स्तर तो हमारे मूल विचारोंका संभालना चाहिये, जिनमें गड़बड़ी पैदा हो गअी है।

फिर भी कुंजरू-कमेटीको व्यर्थ तो कैसे कहा जा सकता है? यह अच्छी बात है कि धीरे धीरे अंग्रेजी माध्यमका प्रश्न अखिल भारतीय भूमिका पर अुठने लगा है और विचार पैदा कर रहा है। यह आवश्यक है कि कमेटी पहलेके जैसा अंग्रेजीका साम्राज्य कायम न रहनेके दुःखमें डूबे बिना अपना काम करे।

अंग्रेजी भाषा सिखानी चाहिये। लेकिन अुसे माध्यमके रूपमें जल्दीसे जल्दी बिदाअी देकर अुसके स्थान पर स्वाभाविक स्वभाषाका अुपयोग करना चाहिये। मूलतः ज्ञानका स्तर शिक्षकोंके विद्याप्रेम और अुनकी अुपासना पर आधार रखता है। पुस्तकें अुसमें मदद कर सकती हैं। अुसके लिअे अंग्रेजी अवश्य सीखी जाय और अुसकी पुस्तकोंका अुपयोग भी किया जाय। कुछ लोग पुस्तकोंकी पुकार मचाते रहते हैं और पूछते हैं कि पुस्तकें कहां हैं। लेकिन

अुन्हें यह बात समझनी चाहिये कि ज्ञानकी भूख पैदा की जायगी तभी लोग पुस्तकें पढ़ेंगे। यह जो कहा जाता है कि विद्यार्थियोंको अनिवार्य रूपमें अंग्रेजी सिखानी चाहिये, अुसका कारण यही है कि ज्ञानकी भूख पैदा होनेके लिअे आवश्यक अंग्रेजी विद्यार्थियोंको आवे। कुंजरू-कमेटी अब भविष्यकी ओर नजर रखकर अिस प्रश्नका विचार करे, तो यह सादी-सी बात अुसकी समझमें आये बिना नहीं रहेगी।

२४–१०–'५५ मगनभाई देसाई

(गुजरातीसे)

क्या यह 'गरीबीका बंटवारा' है?

अब भूदान आन्दोलन, जो साम्यवादियोंके आतंकसे पीड़ित तेलंगाना प्रदेशके अेक छोटेसे गांवमें अप्रैल १९५१ में आरंभ हुआ था, देशके सारे हिस्सोंमें फैल गया है। लेकिन कुछ टीकाकारोंका कहना है कि भूदानमें गरीबोंको जमीन बांटना राष्ट्रीय दृष्टिसे बेकार होगा, क्योंकि वे लोग साधन-सामग्री, बैलों और औजारों वगैराके अभावमें जमीनोंमें खेती नहीं कर सकेंगे। यह कहकर भी अिसका विरोध किया जाता है कि चूंकि जमीन कभी कभी छोटे टुकड़ोंमें बांटी जाती है, अिसलिअे वह पानेवालेके लिअे आर्थिक दृष्टिसे लाभकारी नहीं होगी। लेकिन नीचेकी हकीकतें यह बतायेंगी कि पिछले कुछ महीनोंमें दरअसल क्या हुआ है। यह अुन सैकड़ों-हजारों गरीब परिवारोंके लिअे सुन्दर और सुखद भविष्यकी आशासे भरी हुअी कहानी है, जो पहले खेतों पर मजदूरोंकी तरह काम करके मुश्किलसे दो जून पेट भर पाते थे।

ये हकीकतें बिहारके पूर्णिया जिले की हैं: अिस जिलेमें अभी तक कुल ९२,७७९ अेकड़ जमीन दानमें मिली है। अिसमें से १०,०१४ अेकड़ जमीन ४,८५६ परिवारोंमें बांटी जा चुकी है। यहां कुछ नमूनेके अुदाहरण दिये जाते हैं, जो बताते हैं कि जमीनके बंटवारेके बाद पिछले कुछ महीनोंमें लोगोंके जीवनमें क्या परिवर्तन हो गया है।

१. श्रीनगर गांवके १७ परिवारोंको, जिनमें से १५ परिवार हरिजन हैं, छोटे टुकड़ोंमें २८.४५ अेकड़ जमीन मिली। दो परिवारोंको, जिनमें से हरअेकके पास अेक अेक बैलजोड़ी है, और अेक तीसरे परिवारको, जिसके पास केवल अेक बैल है, छोड़कर बाकी परिवारोंके पास कोअी साधन-सामग्री नहीं थी। लगभग यह सारी जमीन अभी तक पड़ती रही थी या वनप्रदेशकी जमीन थी। अिसमें से करीब १३ अेकड़ जमीन पड़ोसियोंके बैलों और हलोंकी मददसे या शरीर-श्रम करके खेतीके लायक बना दी गअी है। सिर्फ अेक परिवार अभी तक खेती शुरू नहीं कर पाया है और अन्य अेक परिवार गांव छोड़कर चला गया है। १७ में से १५ परिवार नअी जमीनको तोड़कर अुसमें खेती करने लगे हैं। ४ अेकड़में से २०।। मनकी खरीफ फसल काट ली गअी है और बाकीकी फसल खेतोंमें खड़ी कटाअीकी राह देख रही है।

२. अिसी तरह मटिया-दीवानगंज गांवमें १८ परिवारोंमें जो २८.८५ अेकड़ पड़ती जमीन बांटी गअी थी, अुसमें से २४.६८ अेकड़ जमीनमें खेती होने लगी है। अनूपनगरमें १५ परिवारोंको जो २५.३४ अेकड़ जमीन बांटी गअी थी, अुसमें से १५.९० अेकड़में खेती की जाती है। दूसरे गांवमें ४ अेकड़ जमीन परसे ३० मन बाजरेकी फसल निकाली जा चुकी है।

३. थाना रुपौलीके अझकुप्पा गांवमें जमीन पानेवाले अेक स्वाभिमानी आदमीने हल और बैलजोड़ीकी मददके बिना स्वयं मेहनत-मशक्कत करके पड़ती जमीनको तोड़कर फसल पैदा की और गांवकी लगभग हर जातिमें से अेक आदमीको अपने परिश्रमके पहले फलसे तैयार किये हुअे भोजनमें शरीक होनेका न्यौता दिया। अुसे यह छोटीसी जमीन अप्रैल १९५५ में ही मिली थी।

४. फोरबसगंज थानाके हरिपुर गांवमें जब अेक दाताने कुछ साधनहीन हरिजन परिवारोंको दी हुअी जमीन पर फसल लहराती हुअी देखी तो अुसे बड़ा आश्चर्य हुआ। अुसने कहा, मैंने अैसी अच्छी फसल अिस जमीन पर कभी नहीं देखी थी। अिसका रहस्य अुसके ध्यानमें यह आया कि जमीन पर बैलोंकी मददसे नहीं बल्कि खुद मेहनत करके लोगोंने घनी खेती की थी। तबसे दाताने खुद अपने हिस्सेकी जमीन पर फावड़ा लेकर काम करना शुरू कर दिया है।

५. जब बिहारके राज्यपाल श्री आर० आर० दिवाकर ता० ७–५–'५५ को कुरसेला गांवमें भूदानकी जमीन बेजमीनोंमें बांटनेके लिअे आये, तब वह रेतीली जमीनकी तरह दिखाअी देती थी। जमीन पानेवाले भी अुसके बारेमें शंकाशील थे। कुछने अैसी जमीन लेनेसे अिनकार कर दिया, परंतु जिलेके भूदान संयोजक श्री वैद्यनाथप्रसाद चौधरीने अुन्हें जमीन स्वीकार करनेके लिअे राजी कर लिया। ता० १०–१०–'५५ को श्री चौधरी फिरसे अुस स्थानसे गुजरे। तब अुस पर हरीभरी फसलें लहरा रही थीं। पास ही बहनेवाली गंगाने यह जादू कर दिया था। नदीके पूरने रेत पर काफी अुपजाअू मिट्टी अिकट्ठी कर दी थी और 'रेतको सोनेमें बदल दिया था'।

६. मदयटोलाके श्री जिलेही अब रातमें सो नहीं पाते। अब वे भूदानकी जमीन पर खड़ी अपनी फसलकी रखवाली करते हैं और दिनमें मौके मौकेसे कुछ झपकियां लेकर अुन्हें नींदकी कमी पूरी करनी पड़ती है।

अूपर अुस परिवर्तनकी कुछ झांकियां दी गअी हैं, जो सैकड़ों गांवोंमें पहलेके हजारों अुपेक्षित परिवारोंके जीवनमें भूदानके कारण हुआ है। पड़ती जमीनोंने हरेभरे खेतोंका रूप ले लिया है। साधन-सामग्रीके अभावने रुकावट बननेके बजाय गरीब लोगोंमें भाअीचारे और सहयोगकी भावना पैदा कर दी है। पहलेके बेजमीन मजदूरोंने श्रमदान-समितियां बना ली हैं। वे भूदानकी जमीन पानेवालोंके खेतोंमें बारी बारीसे सामूहिक परिश्रम करते हैं। अिस सहयोगने मानव-शक्तिके अभावमें खड़ी फसलोंको बरबाद होनेसे बचा लिया है। बहुतसे जमीन पानेवालोंने अिस मौसममें ३०० रुपये तक कमाअी की है, जिससे वे बैलजोड़ी, हल वगैरा खरीदने लायक बन गये हैं।

अिस तरह भूदान आन्दोलन 'गरीबी बांटने' के बदले अनेक परिवारोंको सुखी बना रहा है। अिसके सिवा, वह गांवके लोगोंमें सहयोग और त्यागकी नअी भावना जाग्रत कर रहा है, जो सच्चा लाभ है; क्योंकि अिसी प्रक्रियाके द्वारा किसानोंकी दिनोंदिन बढ़नेवाली समृद्धि और शक्तिकी नींव डाली जा रही है।

(अंग्रेजीसे) सिद्धराज ढड्ढा

विषय–सूची

		पृष्ठ
नयी तालीमका आदर्श	विनोबा	३२१
युनिवर्सिटी डिग्री और सरकारी नौकरियां	मगनभाई देसाई	३२३
आर्थिक पुनर्गठनके दो अलग रास्ते	मगनभाई देसाई	३२४
दिल्ली और बम्बअी	मगनभाई देसाई	३२५
बम्बअी सरकारकी सर्वोदय योजना	वैकुण्ठभाअी महेता	३२६
भारत और विश्वशान्ति	अे० पी० पट्टणी	३२६
शिक्षणका स्तर और अंग्रेजी भाषा	मगनभाई देसाई	३२७
क्या यह 'गरीबीका बंटवारा' है?	सिद्धराज ढड्ढा	३३८

www.vinoba.in